एक किस्म के अंधत्व की रोकथाम का नया उपाय

ताज़ा शोध के परिणामस्वरूप एक दवा विकसित हुई है जो एक खास किस्म के अंधत्व की रोकथाम में सहायक सिद्ध हो सकती है।

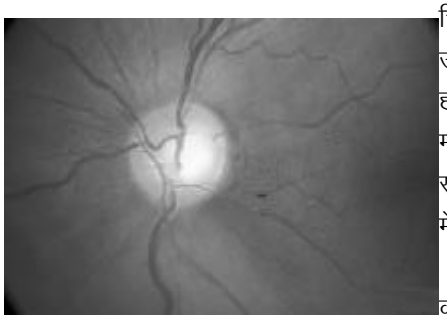

बात उस रोग की है जिसे लेबर्स वंशानुगत ऑप्टिक न्यूरोपैथी कहते हैं। इसमें होता यह है कि आंख के रेटिना की प्रकाश संवेदी कोशिकाओं को प्रकाश तंत्रिका से जोड़ने वाली कोशिकाओं के माइटोकॉण्ड्रिया नामक उपांग में कुछ गड़बड़ी पैदा हो जाती है। गौरतलब है कि माइटोकॉण्ड्रिया वह कोशिकांग है जो कोशिकाओं के लिए ऊर्जा उपलब्ध कराने का काम करता है। यह ठीक से काम न करे तो कोशिका को अपने कामकाज के लिए ऊर्जा नहीं मिल पाती। लिहाज़ा रेटिना की प्रकाश संवेदी कोशिकाओं से संकेत प्रकाश तंत्रिका तक नहीं पहुंचते।

ताज़ा शोध में एक दवा इडेबेनोन का परीक्षण किया गया। लेबर्स रोग से पीड़ित 55 लोगों को इडेबेनोन दी गई जबकि अन्य 30 मरीज़ों को प्लेसिबो का सेवन कराया गया। देखा गया कि जिन 55 लोगों को इडेबेनोन दी गई थी उनमें से 11 लोग 6 माह बाद मानक दृष्टि चार्ट पर दो अतिरिक्त पंक्तियां पढ़ने लगे। अन्य 9 लोगों की दृष्टि में भी काफी सुधार देखा गया।

शोध दल के मुखिया न्यू कासल विश्वविद्यालय के पैट्रिक चिनेरी का कहना है कि यह दवा कोई उपचार तो नहीं है मगर इसका असर होता है। लगता है कि इडेबेनोन माइटोकॉण्ड्रिया में उस एंज़ाइम को सक्रिय कर देती है जो ऊर्जा उत्पादन में भूमिका निभाता है।

मगर यह दवा सारे लोगों पर कारगर नहीं होती। शोध के नतीजे बताते हैं कि यह उन लोगों में ज़्यादा असर दिखाती है जिनमें रोग की शुरुआत ही हुई है। यानी इसके लिए ज़रूरी होगा कि उन लोगों की पहचान जल्दी हो जाए जिनमें उपरोक्त आनुवंशिक गड़बड़ी हो।

वैसे इस शोध का एक व्यापक परिणाम भी है। कई सारे ऐसे रोग हैं जो माइटेकॉण्ड्रिया के ठीक से काम न करने के कारण होते हैं। संभावना यह है कि इडेबेनोन इनमें समान रूप से असरदार साबित होगी। ऐसा ही एक रोग है मेलास सिंड्रोम जिसमें माइटोकॉण्ड्रिया की क्रिया में गड़बड़ी का असर मांसपेशियों पर पड़ता है। शोधकर्ताओं का ख्याल है कि इस मामले में भी इडेबेनोन को आज़माया जा सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***